वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

अंकिताक संग वर्णमाला-यात्रा

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : अंकिता आ ओकर पिता

ई पोथी आन सभ बाल-उपन्याससँ भिन्न अछि — ई मैथिली वर्णमाला सिखएबाक एकटा प्रयास थिक। अंकिता नामक एकटा नान्हि सन बुच्चीक संग हुनक पिता यात्रा करैत छथि, आ एहि यात्रामे प्रत्येक अध्याय मैथिली वर्णमालाक एक-एक वर्गसँ शुरू होएबला शब्दसँ भरल अछि।

पहिल अध्याय 'अ' वर्णसँ, दोसर 'क' वर्गसँ, तेसर 'च' वर्गसँ — एहिना आगाँ बढ़ैत, अंकिताक साँझक यात्रा वर्णमालाक पूरा यात्रा बनि जाइत अछि। प्रत्येक अध्यायक अन्तमे प्रश्नोत्तर सेहो देल गेल अछि, जाहिसँ बच्चा शब्द आ अर्थ दुनू सीखि सकए।

अध्याय १ : अकादारुण साँझ (अ-वर्ण)

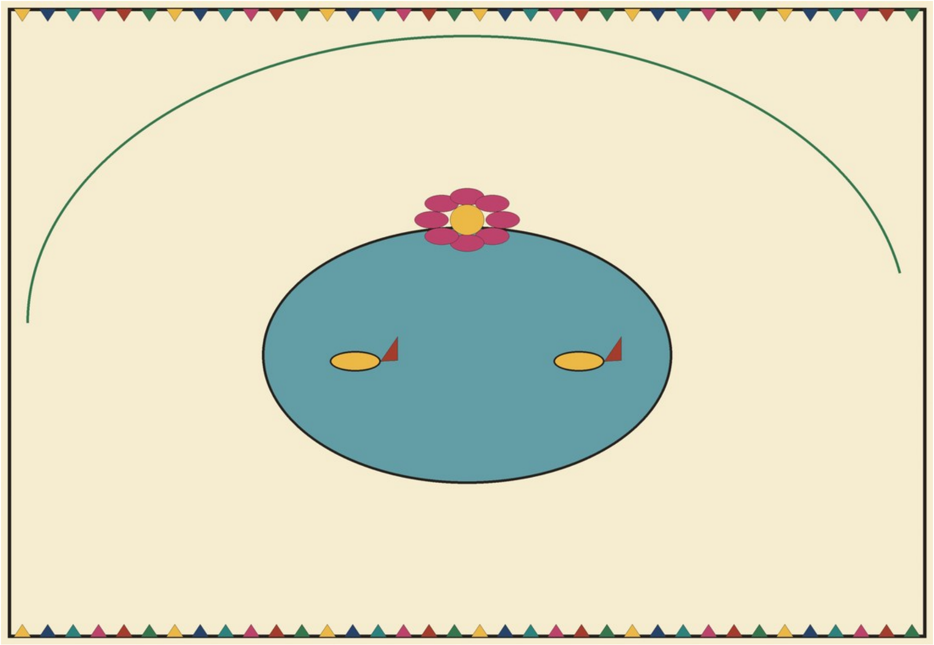

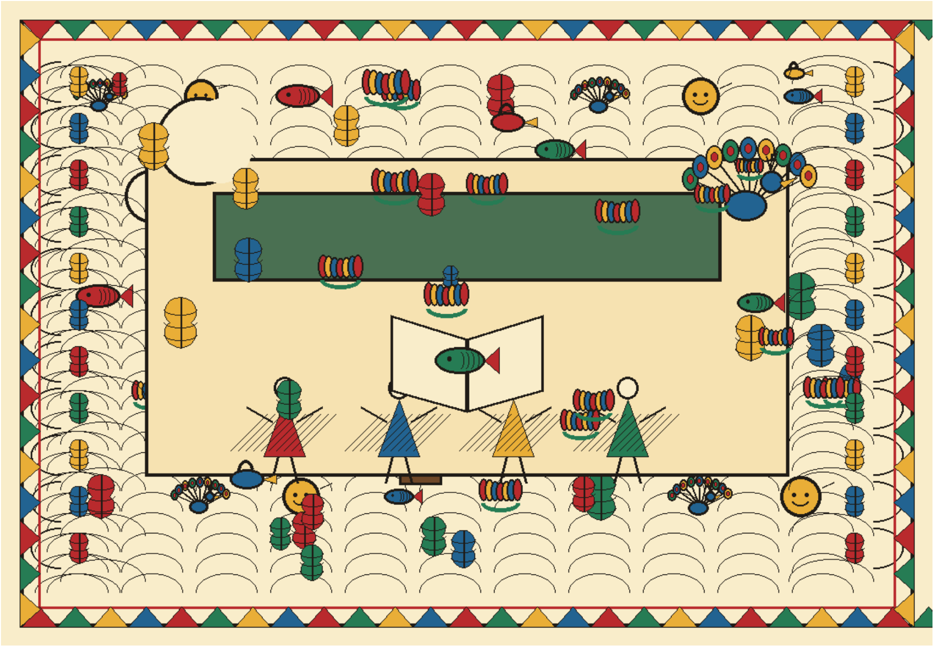

चित्र 1

अकादारुण समय छल। अंकिता अडैठीमोड़ कएलक। ओकर पिता कहलनि —

'अतत्तह करए छी। जल्दीसँ झटकारि कऽ चलू!'

अंकिता अकच्छ भऽ गेलि। चलैत-चलैत ओकर पएर दुखा गेलैक — नान्हिटा पएरक लेल नमहर रस्ता।

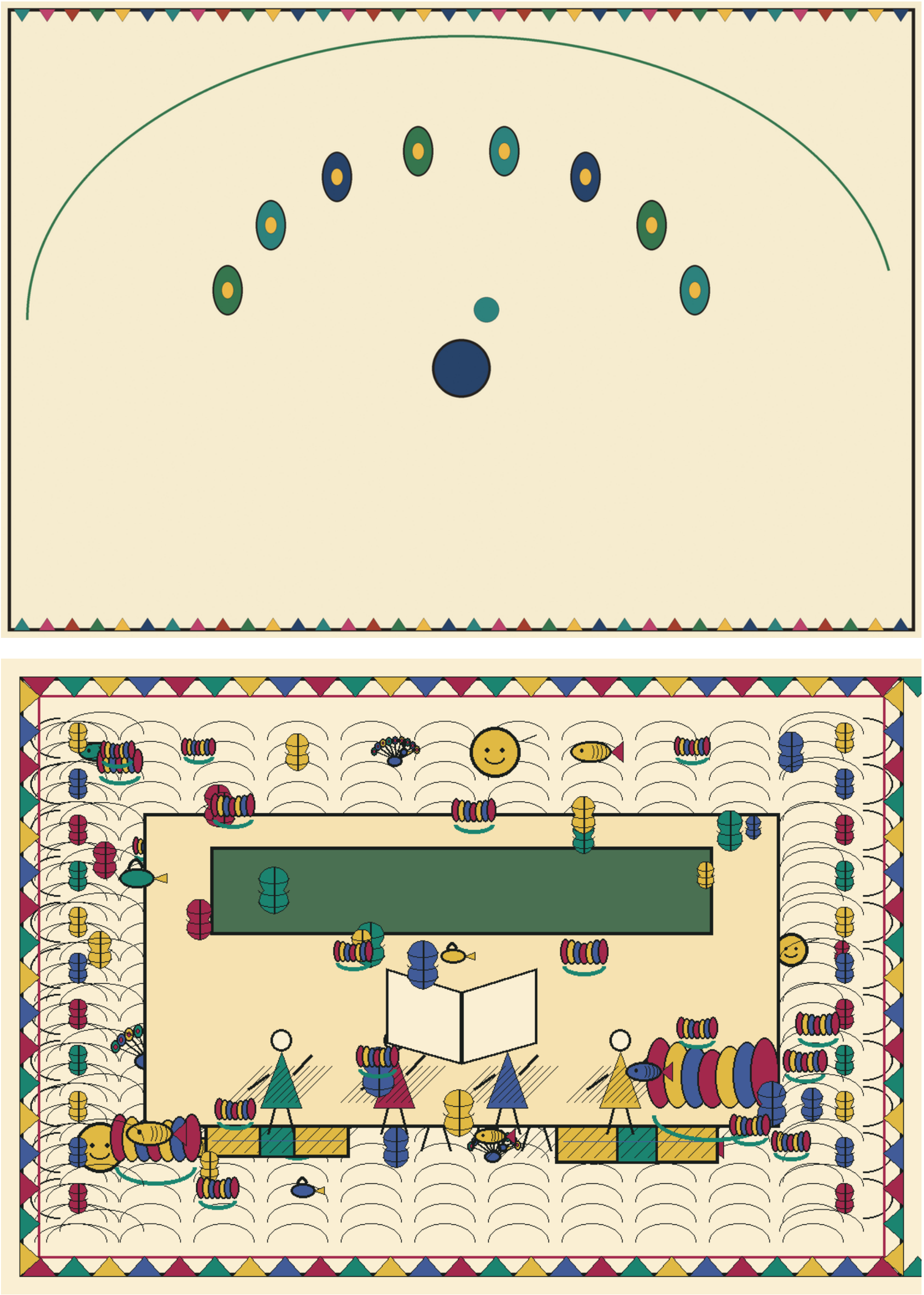

चित्र 2

रस्तामे ओ एकटा लालछड़ी बलाकेँ देखलक — 'हमरा लालछड़ी कीनि दिअ!' पिता कहलनि — 'अंकिता, अकर-धकर नहि खाऊ।' मुदा अंकिता जिद्द केलक — 'नहि! हमरा ई चाहबे करी!' पिता हँसैत कहलनि — 'अहूँ अधक्की छी, एखने त' कतेक रास चीज खएने रही!' तैयो पिता ओकरा लालछड़ी कीनि देलनि।

रस्तामे अगिनवान देखि अंकिता पुछलक — 'ई आगि किएक लागल अछि?' पिता कहलनि — 'बोन-झाँकुर खतम करबाक लेल।' अंकिता ध्यानसँ देखि कहलक — 'अक्खज गाछ सभ तैयो नहि जरल अछि!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: बचियाक नाम की छी?

उत्तर: अंकिता

प्रश्न: समय केहन छल?

उत्तर: अकादारुण

प्रश्न: अंकिता चलैत-चलैत... भऽ गेल छलि।

उत्तर: अकच्छ

प्रश्न: पिता ... खाए लेल मना केलन्हि।

उत्तर: अकर-धकर

प्रश्न: बोन-झाँकुड़ जरएबाक आगिक लेल प्रयुक्त शब्द की छल?

उत्तर: अगिनवान

प्रश्न: अगिनवानमे केहन बोन-झाँकुड़ नहि जरल?

उत्तर: अक्खज

अध्याय २ : छाहरिमे विश्राम (आगाँक अ-वर्ण)

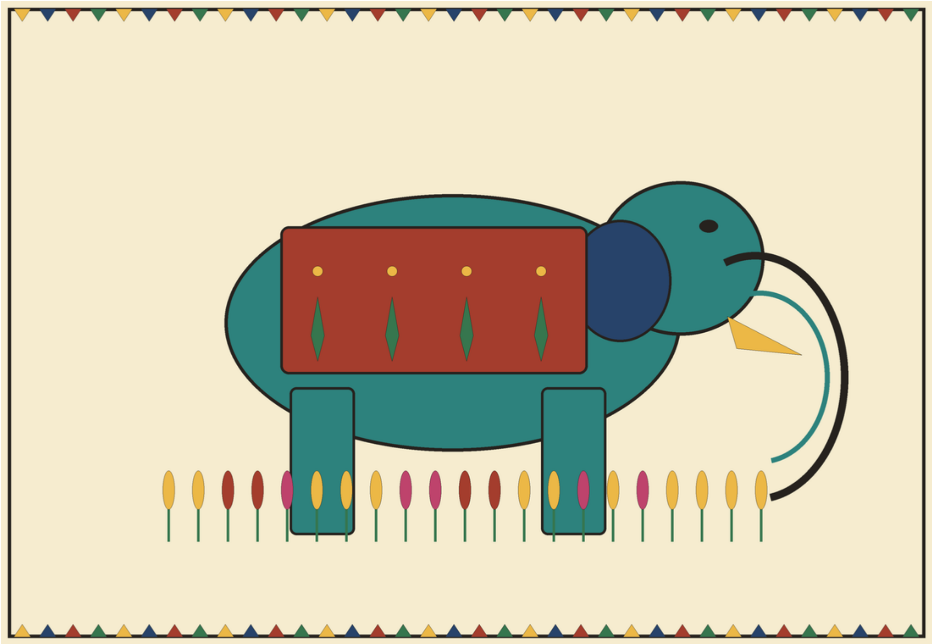

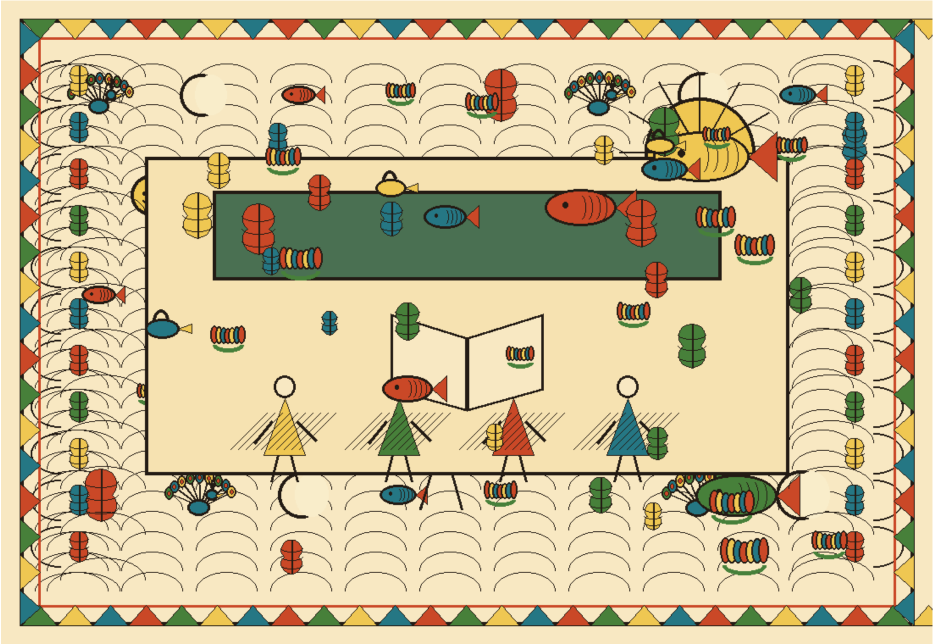

चित्र 3

कनी काल दुनू बाप-बेटी गाछक छाहमे बैसि जाइ गेलाह — थाकल पएरकेँ आराम देबाक लेल। अंकिता उकड़ू भऽ बैसि गेलि आ उकसपाकस करए लागलि।

पिता पुछलनि — 'अहाँकेँ उखी-बिखी किएक लागल अछि अंकिता? साँझ भऽ गेल अछि। कनेक काल आर चलब त' घर आबि जाएत।'

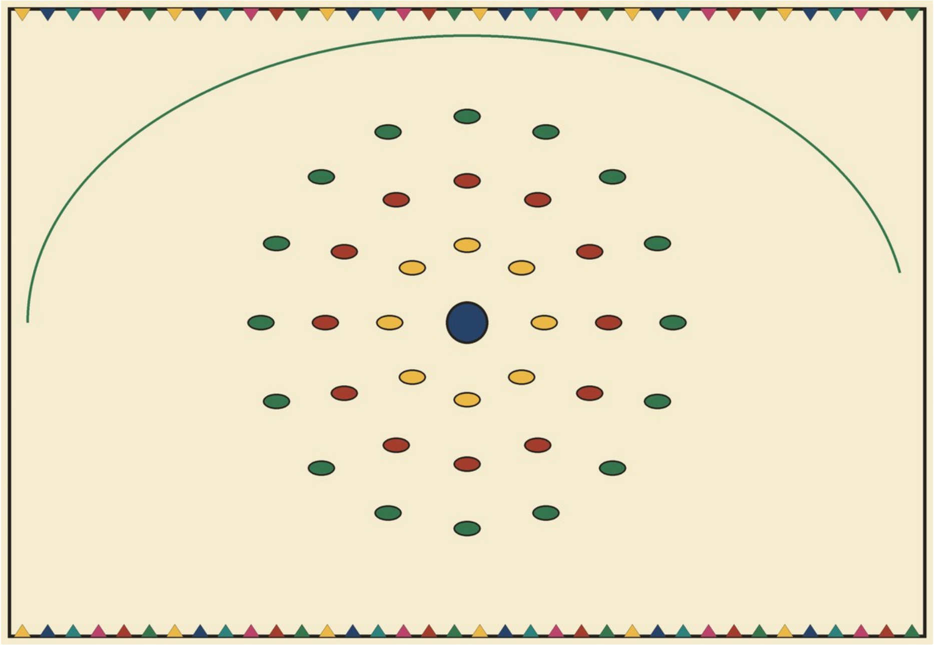

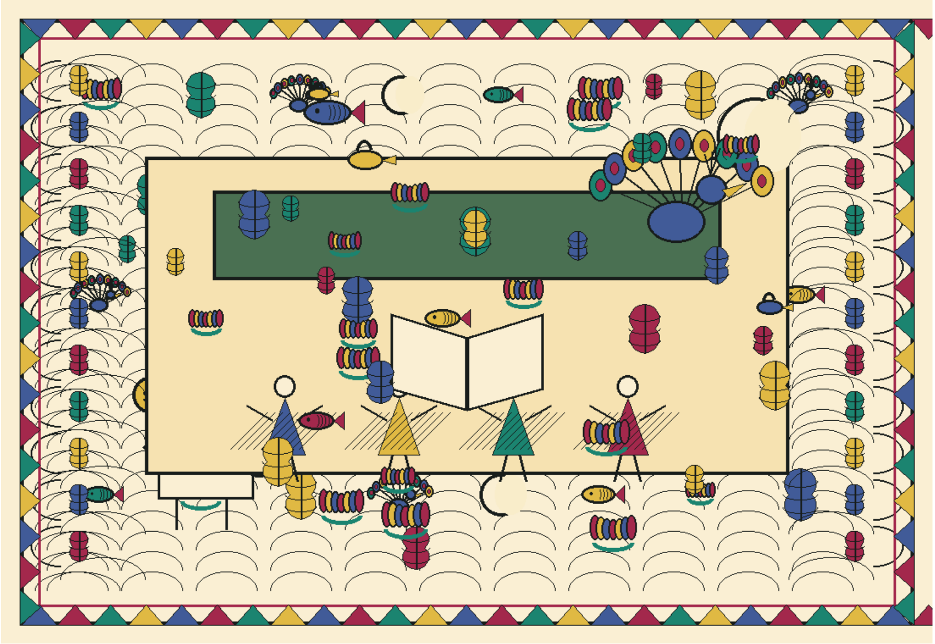

चित्र 4

तखने अकासमे अंकिता उकापतङ्ग देखलक, आ बाजलि — 'एक उखराहा चललाक बादो गामपर नहि पहुँचलहुँ!'

पिता कहलनि — 'चलू, चली, रस्ता धऽ कऽ चलू, नहि त' उड़कुस्सी देहमे लागि जाएत।' अंकिता कहलक — 'दिन रहितए त' खेतमे ओड़हा खइतहुँ!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: अंकिता कोन आसनमे बैसलि?

उत्तर: उकड़ू

प्रश्न: अंकिताकेँ की लागल छलैक?

उत्तर: उखी-बिखी

प्रश्न: अकासमे अंकिता की देखलक?

उत्तर: उकापतङ्ग

प्रश्न: रस्तापर *विषाक्त रोइआँवाली लत्ती जकरा छूला से पीड़ा आ नोचनी उठैत अछि* लेल कोन शब्द अएलैक?

उत्तर: उड़कुस्सी

अध्याय ३ : कलमक कड़ेकमान (क-वर्ग)

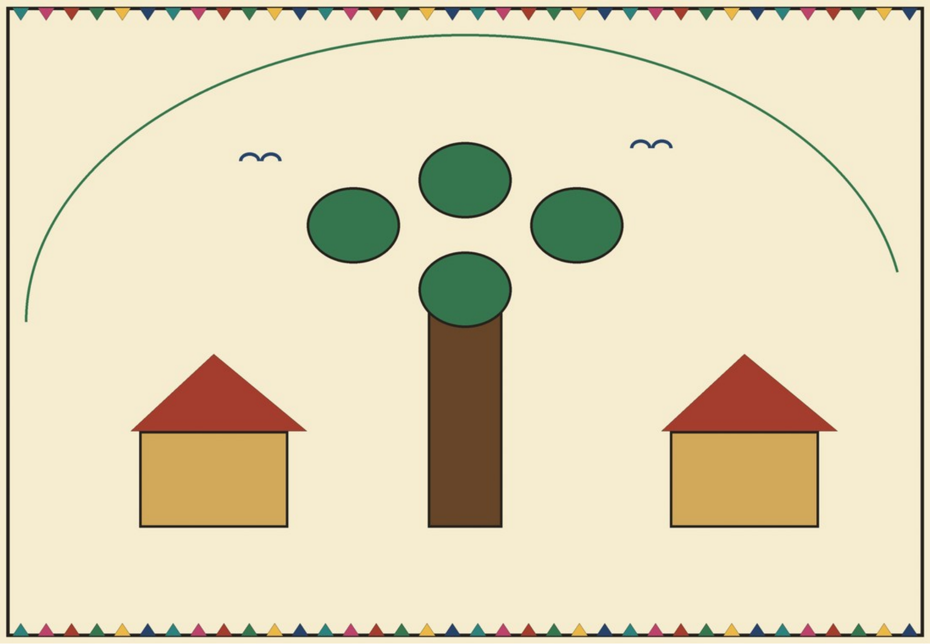

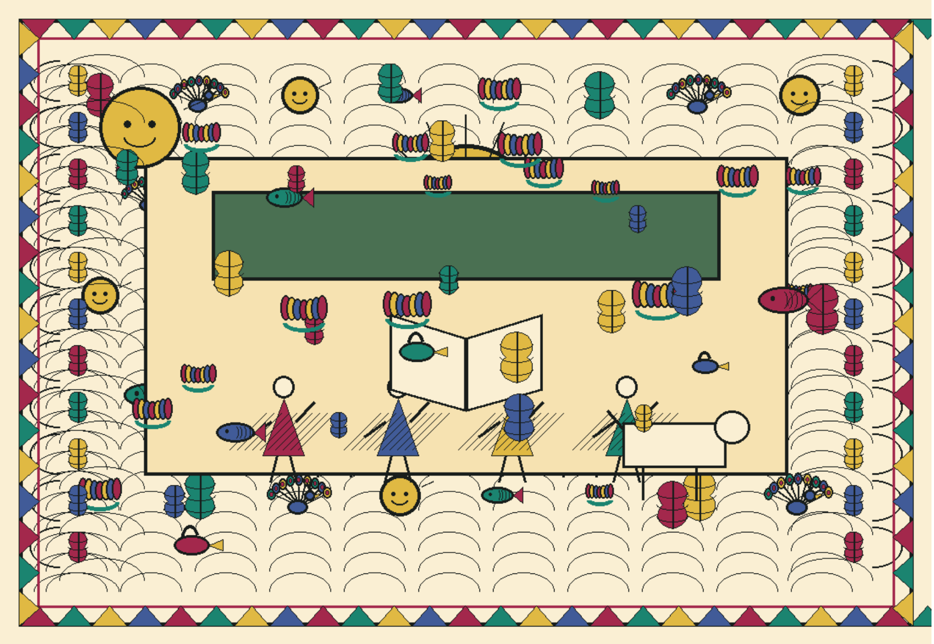

चित्र 5

आगाँ बढ़ैत पिता कहलनि — 'कलममे ओगरबाह सभ आबि गेल। कड़ेकमान अछि, अपन-अपन मचानपर!' अंकिता कौतूहलसँ ताकए लागलि।

'इजोरियामे देखू' — पिता कहलनि — 'दिनमे बरखा भेल रहए, से लोक सभ खेतमे कदबा केने अछि।' अंकिता खेतक हरियरी देखि प्रसन्न भेलि।

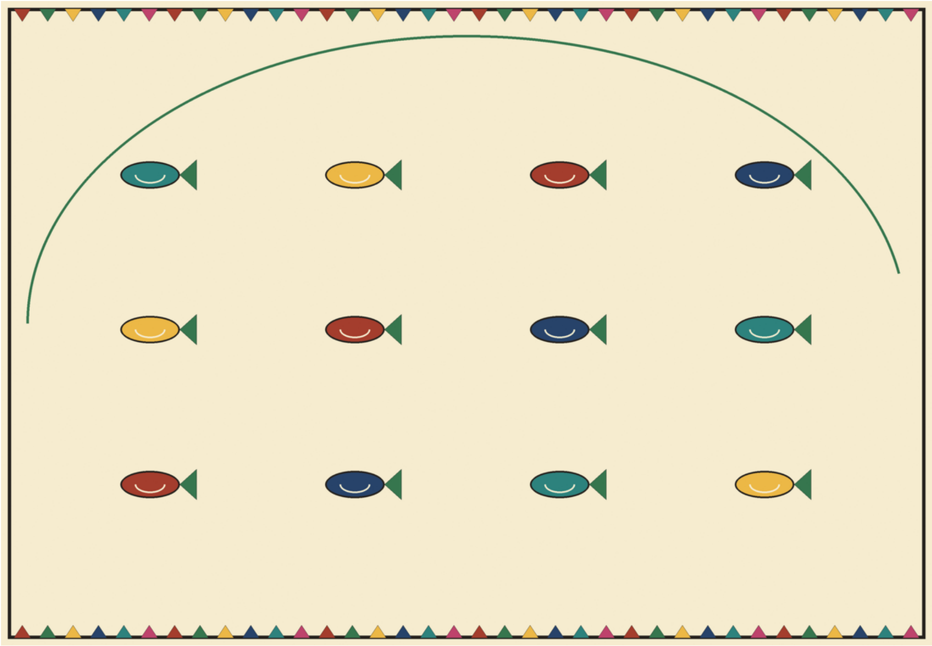

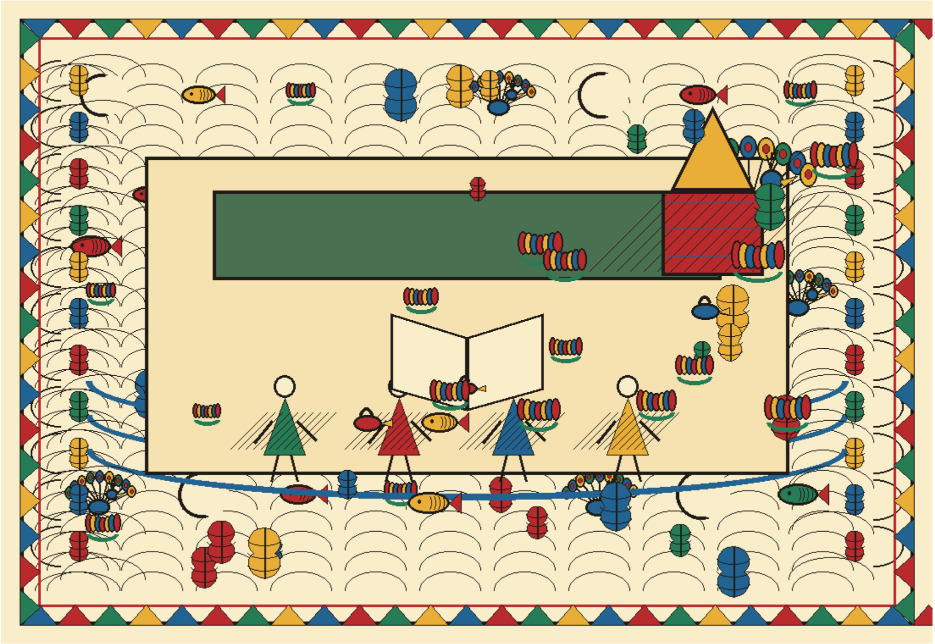

चित्र 6

'कमरसारि आबि गेल, आ अपन सभक घर सेहो!' — पिताक स्वरमे राहतक भाव छल, नम्हर यात्राक अन्त निकट छल।

अंकिता कूदि पड़लि — 'कतेक कोस चललहुँ पिताजी?' पिता हँसैत कहलनि — 'कमसँ कम कोस, मुदा आब कष्ट समाप्त!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: कलममे रखबारीक लेल के आबि गेल छला?

उत्तर: ओगरबाह

प्रश्न: मचानपर पहरा छल?

उत्तर: कड़ेकमान

प्रश्न: इजोरियामे लोक खेतमे की केने छल?

उत्तर: कदबा

प्रश्न: गामक कमारक कारखाना लेल कोन शब्द प्रयुक्त भेल?

उत्तर: कमरसारि

अध्याय ४ : चौपर आ चिक्कन बाट (च-वर्ग)

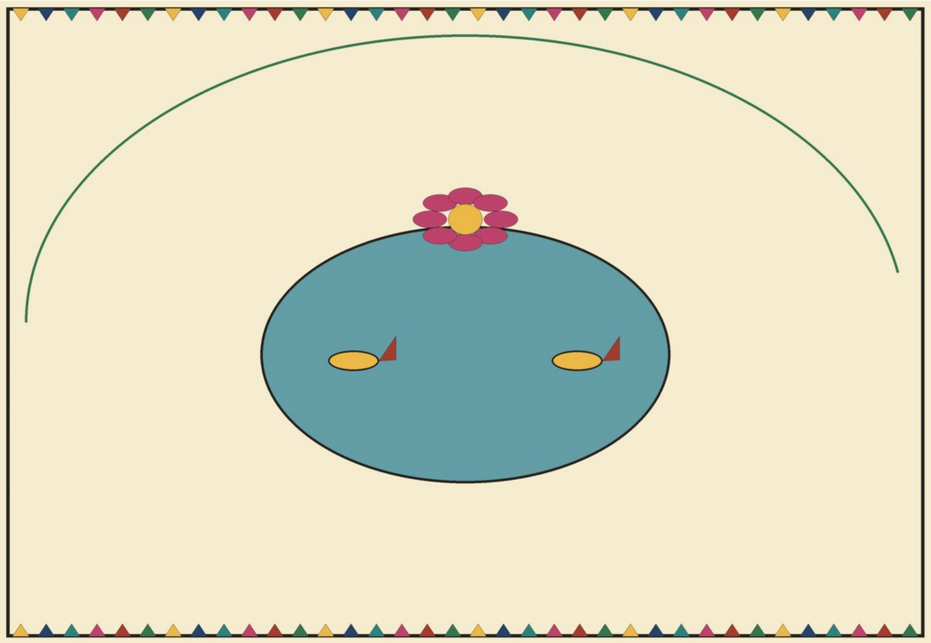

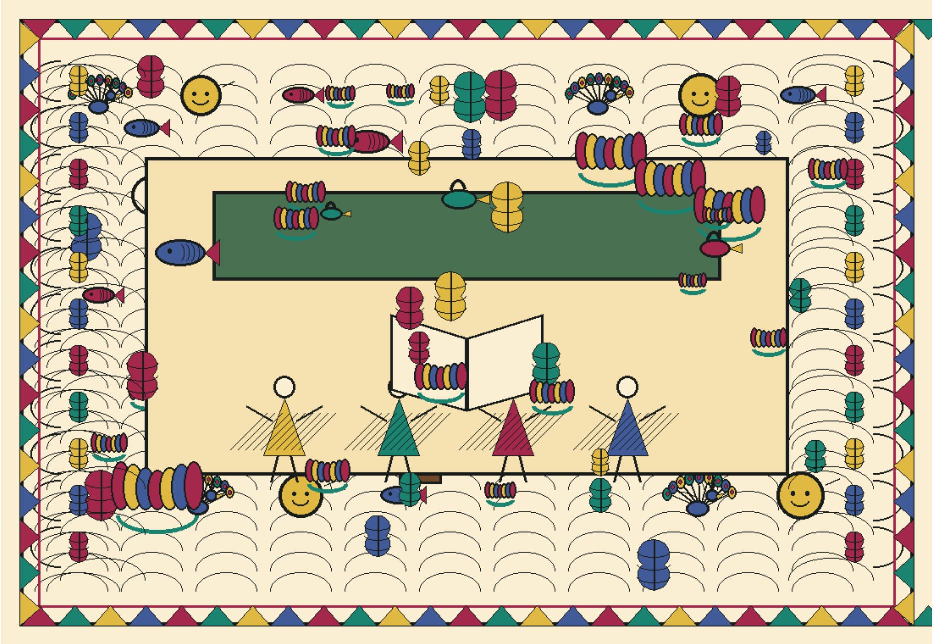

चित्र 7

गामक चौपरपर पहुँचिते अंकिता चंचल भऽ गेलि — घर लगमे बुझि उत्साहित। पिता कहलनि — 'चटपट चलू, चिक्कन बाट अछि, आब देरी नहि करू।'

अंकिता चिचिआयलि — 'ओ देखू, चम्पाक गाछ!' — रस्ता कातमे ठाढ़ चम्पाक गाछ, फूलक सुगन्धसँ भरल, अंकिताक मोन मोहि लेलक।

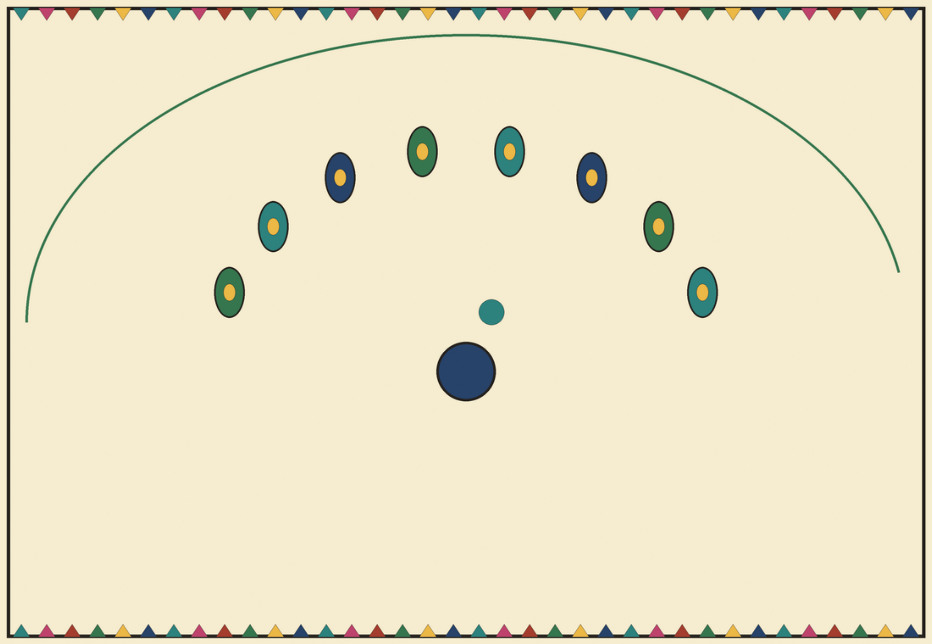

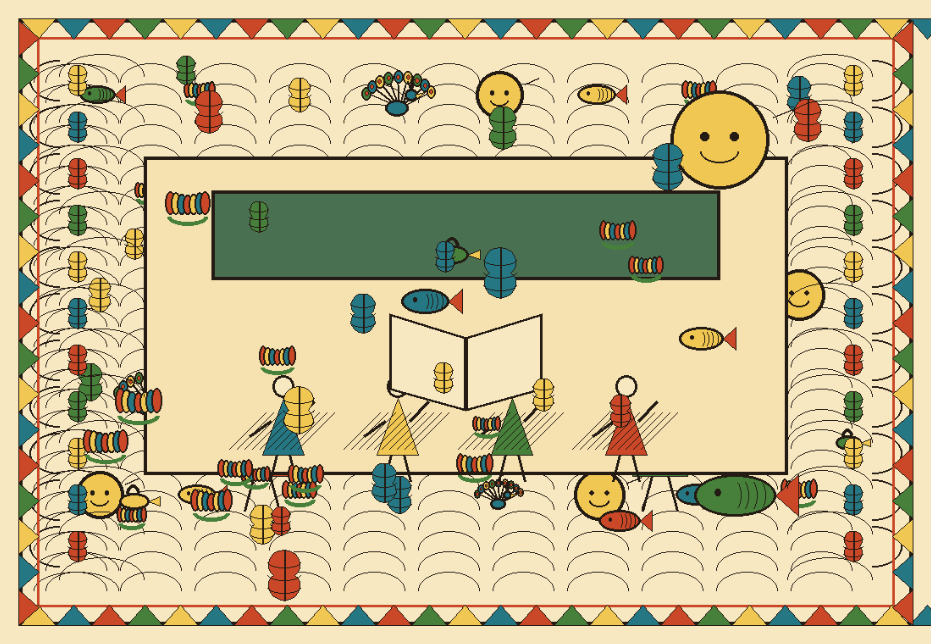

चित्र 8

'चानो निकलि आयल अछि' — पिता आकाश दिस देखैत कहलनि — 'चाँदनीमे बाट आरो चिक्कन बुझाइत अछि।'

अंकिता चंचल भऽ आगाँ-आगाँ दौड़ए लागलि — घरक चिन्हार गली देखि ओकर पएरक थकान जेना उड़ि गेल छलैक।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: गामक कोन स्थानपर पहुँचिते अंकिता चंचल भेलि?

उत्तर: चौपर

प्रश्न: पिता कोन प्रकारक बाटपर चलबाक लेल कहलनि?

उत्तर: चिक्कन

प्रश्न: अंकिता कोन गाछ देखि चिचिआयलि?

उत्तर: चम्पाक गाछ

प्रश्न: आकाशमे की निकलि आयल छल?

उत्तर: चान

अध्याय ५ : टोलक टाभनेबोक गाछ लग टाहि मारब (ट-वर्ग)

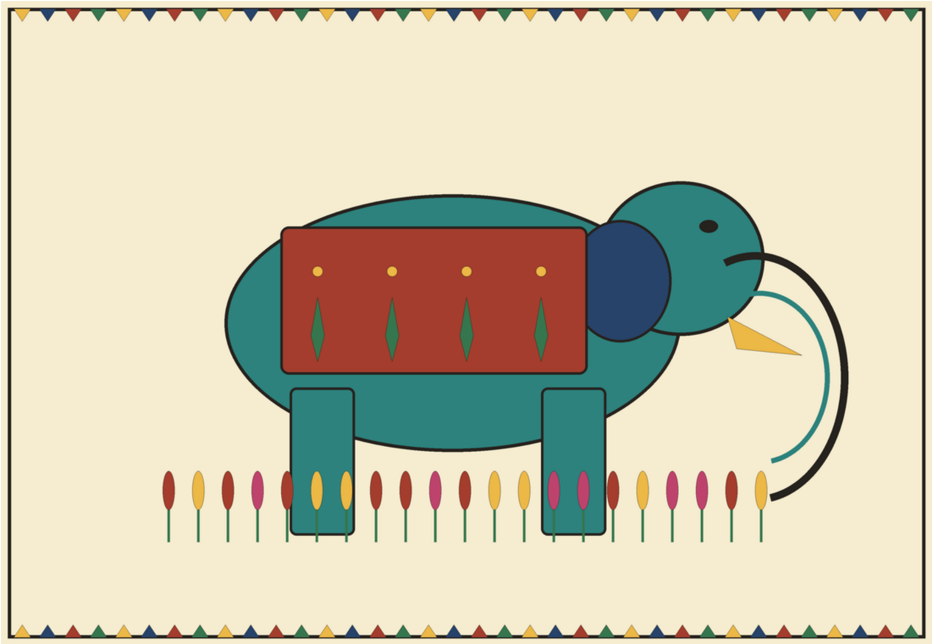

चित्र 9

टोलक टाभनेबोक गाछ लग पहुँचिते अंकिता ककरो टाहि मारि कऽ बजबाक स्वर सुनलक। ऐ टहाटहीमे लागल जे कोनो रतिचर मनुक्खक अबाजमे बाजल छल। पिता कहलनि — 'देखू, डिहबार स्थान लग दीप जरि रहल अछि।'

अंकिता टुनटुन बाजए लागलि — 'हमरा भूख लागल अछि पिताजी!' पिता हँसैत कहलनि — 'घर पहुँचि टटका रोटी बनतै।'

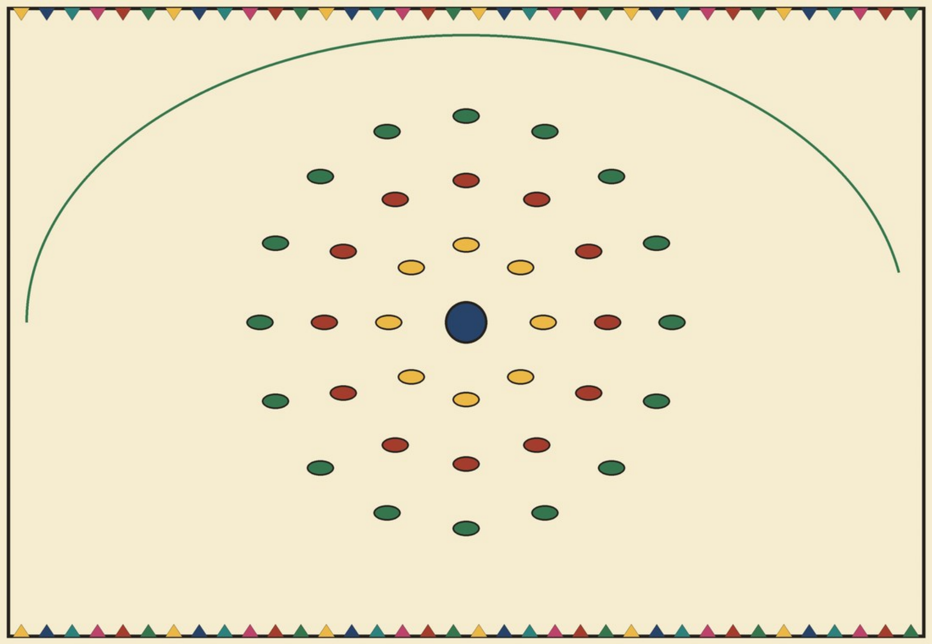

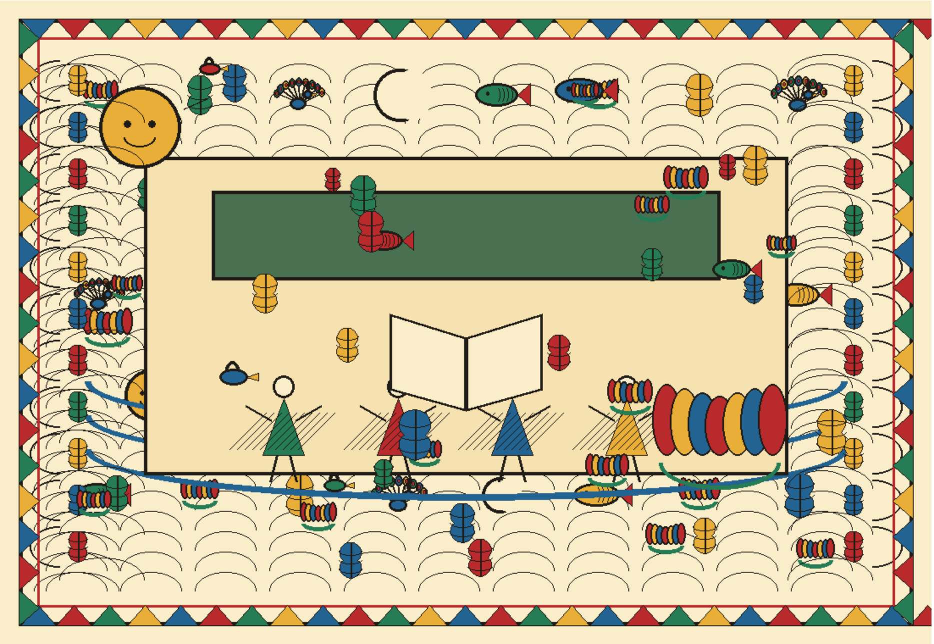

चित्र 10

अंकिता ठोंठ पर हाथ राखलक, जेना कण्ठ सुखाइत होइक — छोट सन तामस, मुदा तुरत्ते बिसरैत, ओ फेर हँसए लागलि।

टोलक कुकुर देखि अंकिता पिताक हाथ जोरसँ पकड़ने रहलि।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: टोलमे कोन स्थान लग दीप जरि रहल छल?

उत्तर: डिहबार (ग्राम देवता) स्थान।

प्रश्न: पिता की बनएबाक बात कहलनि?

उत्तर: टटका रोटी

अध्याय ३ : तरेगण (त-वर्ग)

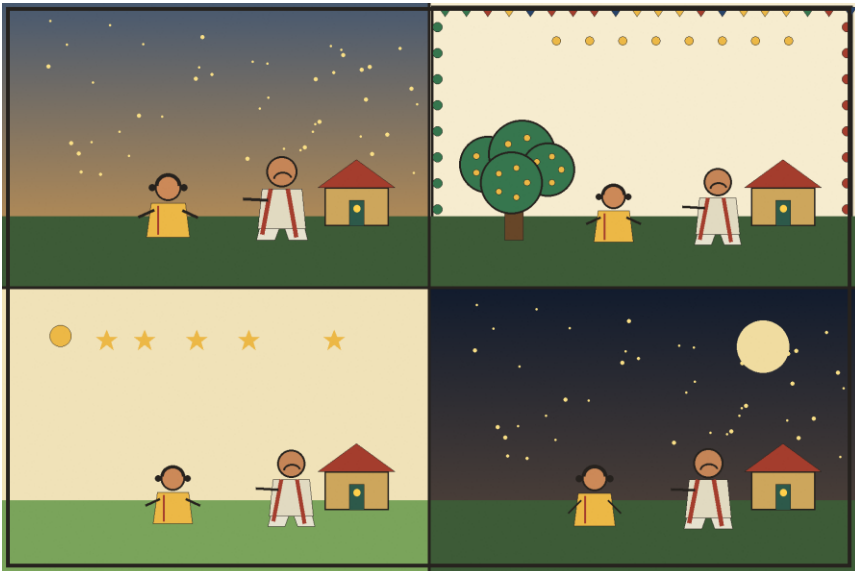

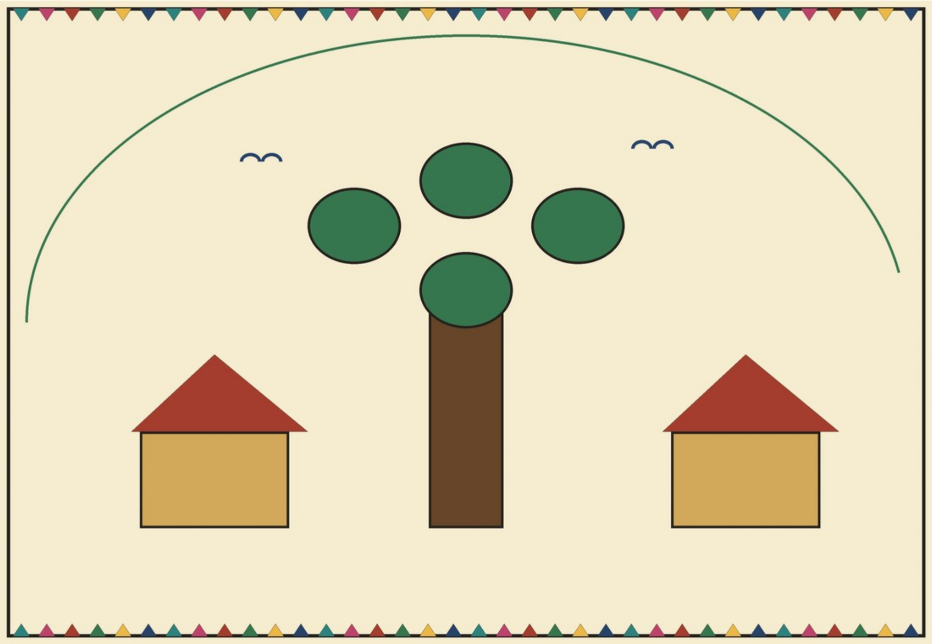

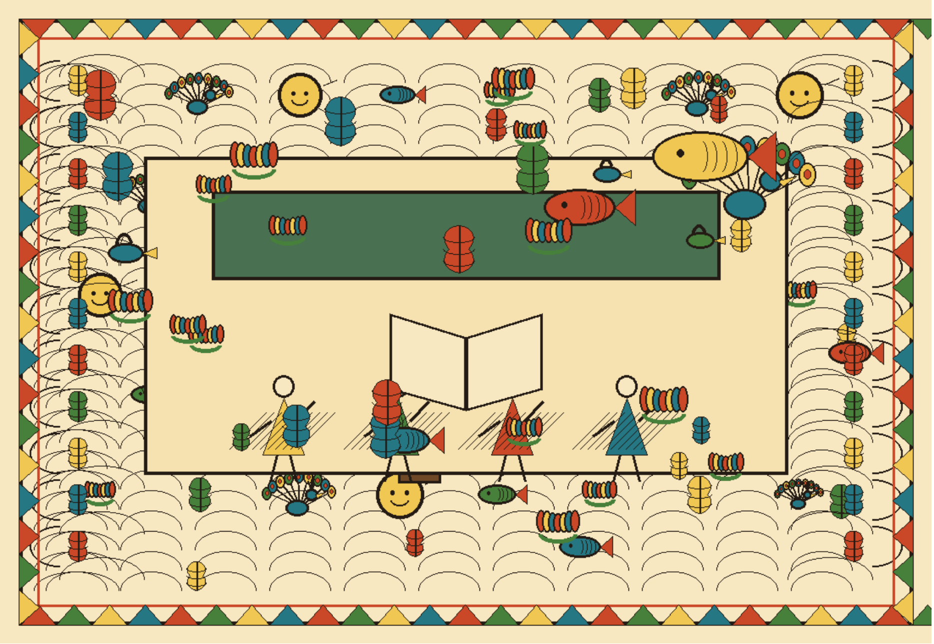

चित्र 11

अन्हार गहीरा गेल छल, आकाशमे तरेगण चमकए लागल। अंकिता तकैत रहलि —

'पिताजी, तरेगण कतेक तेज देखा रहल अछि! कतेक रास! मोन तिरपित भऽ गेल!

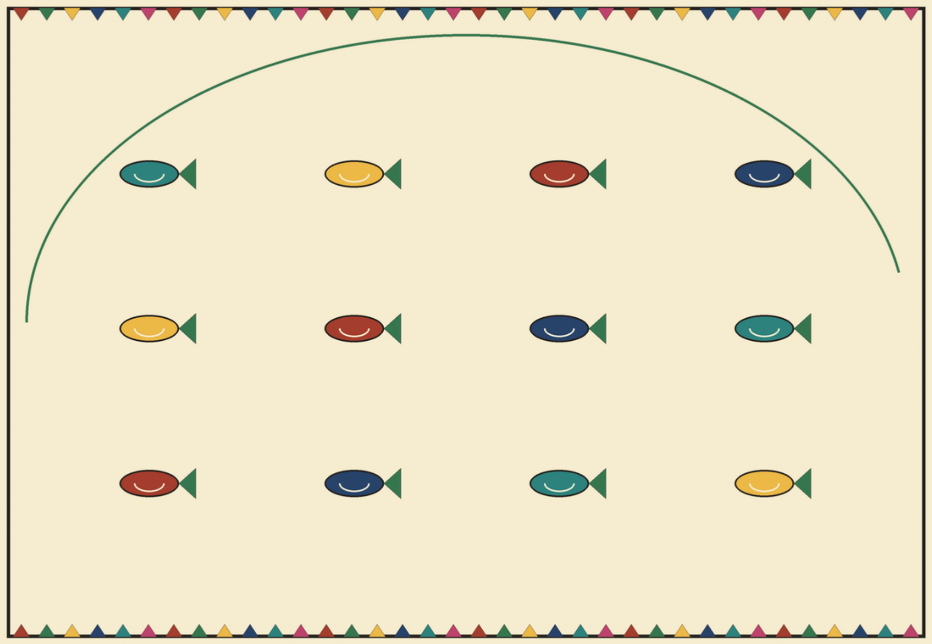

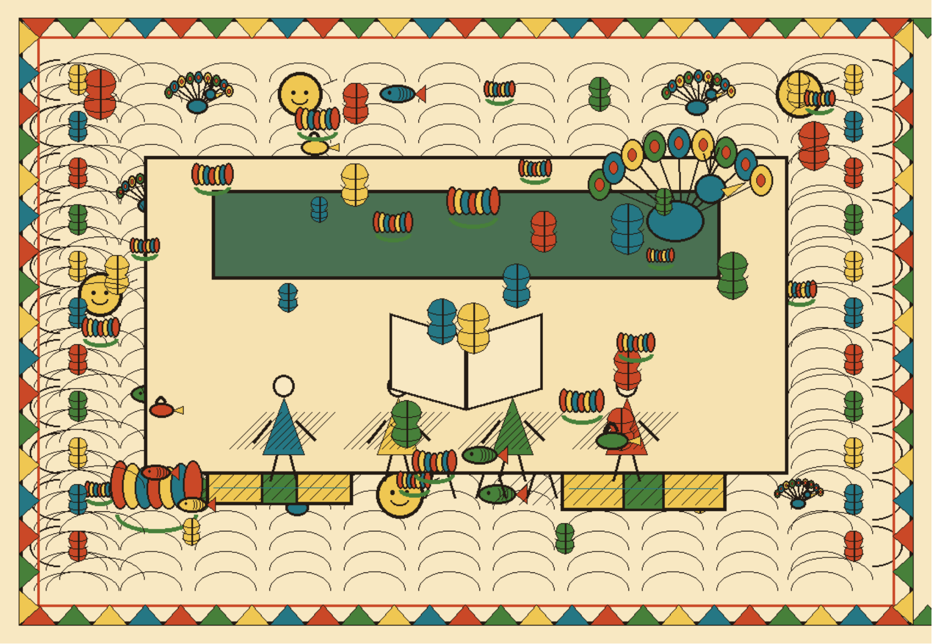

चित्र 12

अंकिता तमसाइत पुछलक — 'एतेक झटकारि किएक चलि रहल छी पिताजी?' पिता स्नेहसँ कहलनि — 'तेज चलल छलहुँ, जइसँ तूँ जल्दी पहुँचि आराम करितह।'

अंकिता तुरत मुस्कुरा उठलि — पिताक स्नेहभरल उत्तर सुनि ओकर सभ शिकायत तिरोहित भऽ गेलैक।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: आकाशमे की चमकए लगलैक?

उत्तर: तरेगण

प्रश्न: अंकिता किएक तमसायलि?

उत्तर: तेज चलबाक कारण

प्रश्न: अंकिताक शिकायत की भऽ गेल?

उत्तर: तिरोहित

अध्याय ७ : पओलक पथक पड़ाव (प-वर्ग)

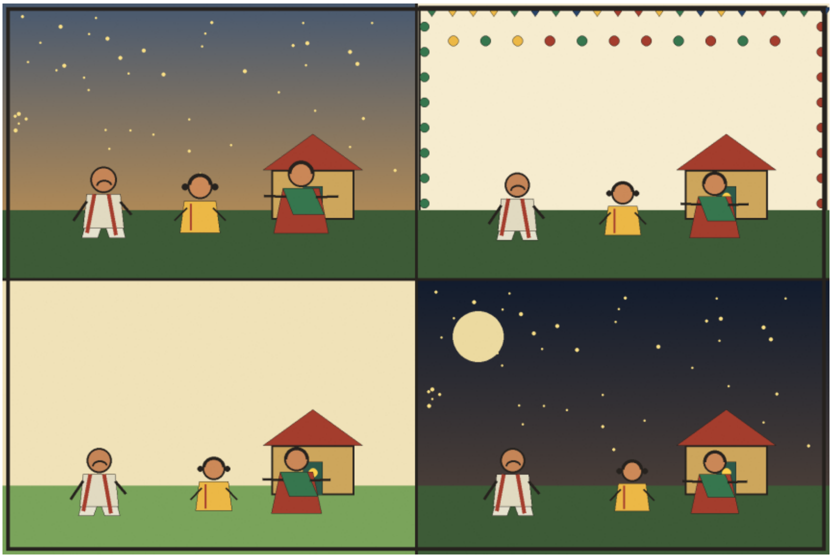

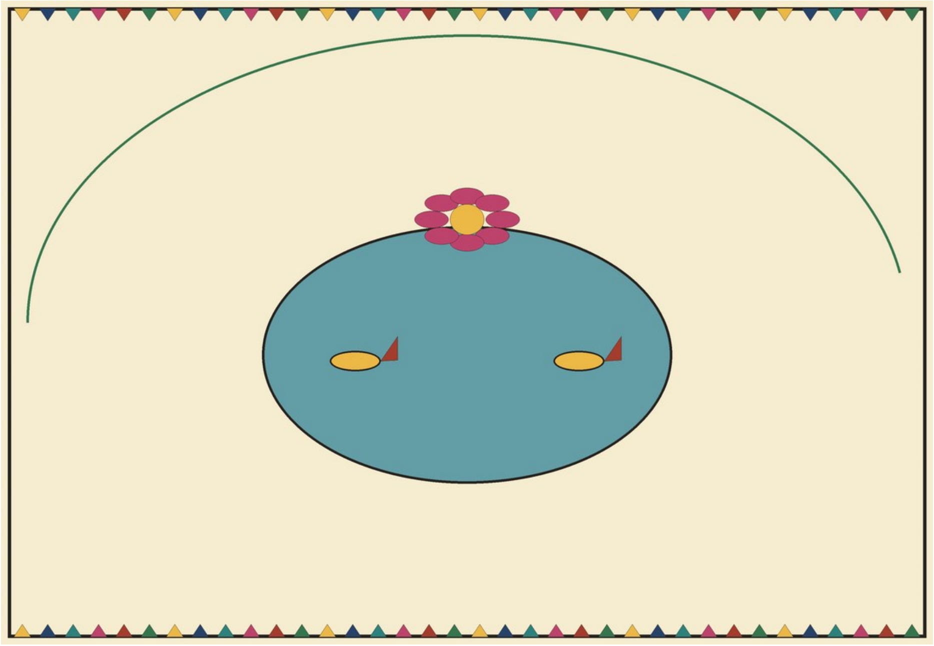

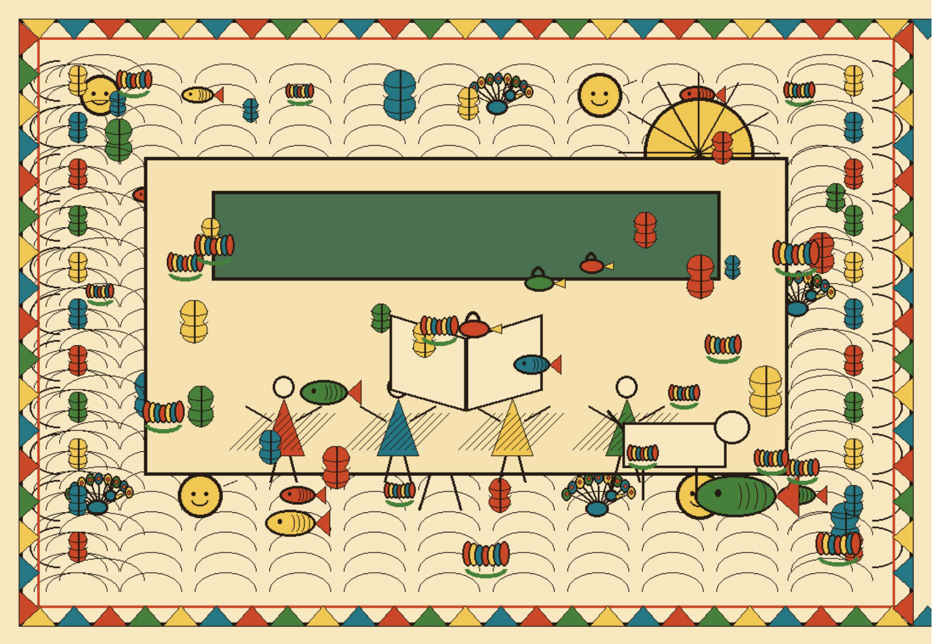

चित्र 13

अन्ततः अंकिता आ पिता द्वार लग पहुँचि गेला — यात्राक अन्त। अंकिता प्रसन्नतासँ पुकारलक — 'माए! हम सभ पहुँचि गेलहुँ!'

पिता पएरक धूरा झाड़ैत कहलनि — 'पूरा दिन परिश्रम भेल, मुदा अंकिता, तूँ बहुत धैर्यसँ चललह। पुरस्कारक हकदार छह!'

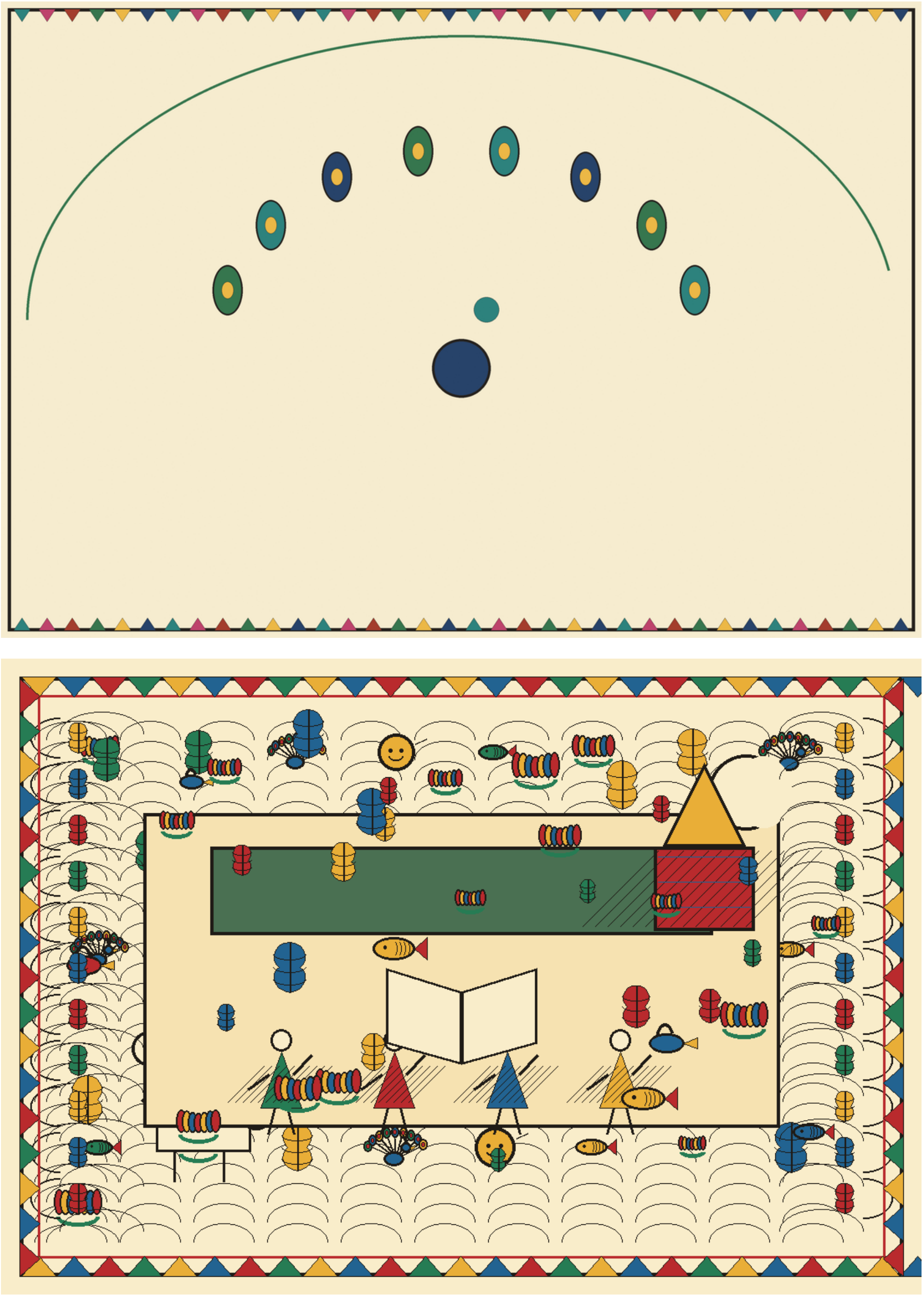

चित्र 14

अंकिताक माए द्वारपर प्रकट भेलीह — 'पहुँचलहुँ! प्रतीक्षा करैत-करैत परेशान भऽ गेल रही!' अंकिता दौड़ि कऽ माएक कोरामे पैसि गेलि।

पिता सन्तोषसँ कहलनि — 'प्रिय बेटी, आइक ई पूरा यात्रा — अकासँ लऽ कऽ प धरिक — तोहर संगे नीक जकाँ पूर्ण भेल। आब आराम करू।'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: अंकिता आ पिता कतय पहुँचला?

उत्तर: द्वार

प्रश्न: पिता अंकिताकेँ कोन गुणक हकदार कहलनि?

उत्तर: धैर्य

प्रश्न: घरपर के प्रतीक्षा करैत छलीह?

उत्तर: माए

प्रश्न: पिता आइक यात्राकेँ की कहलनि?

उत्तर: पूर्ण भेल

अध्याय 8 : वर्णमालाक अन्तिम चरण (य-ह वर्ग)

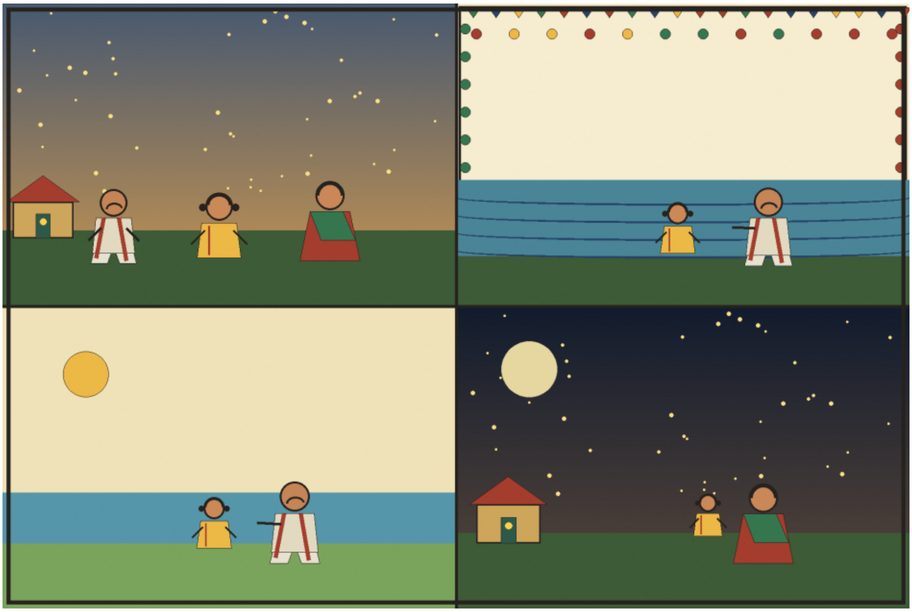

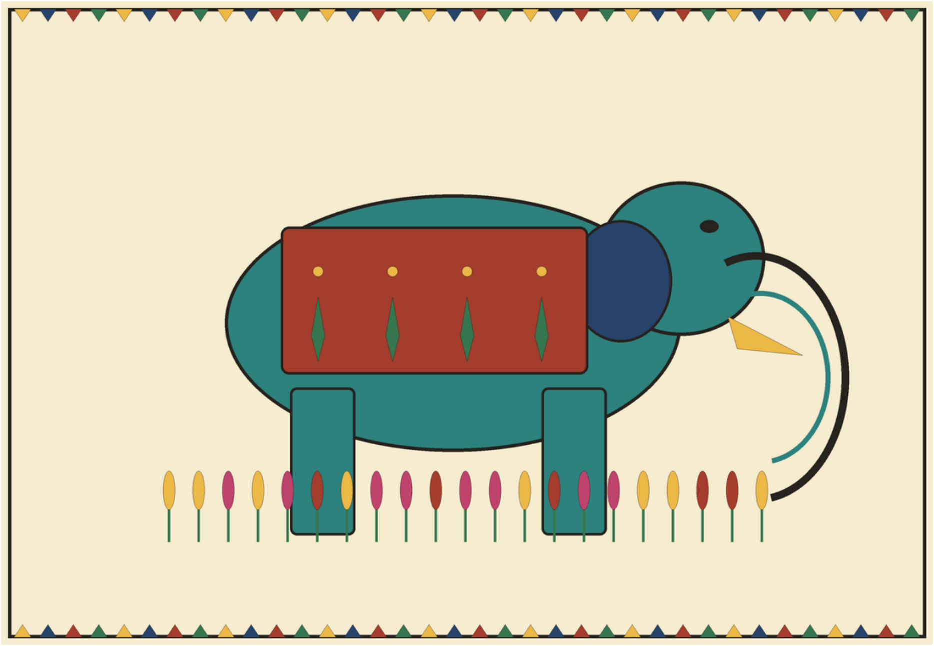

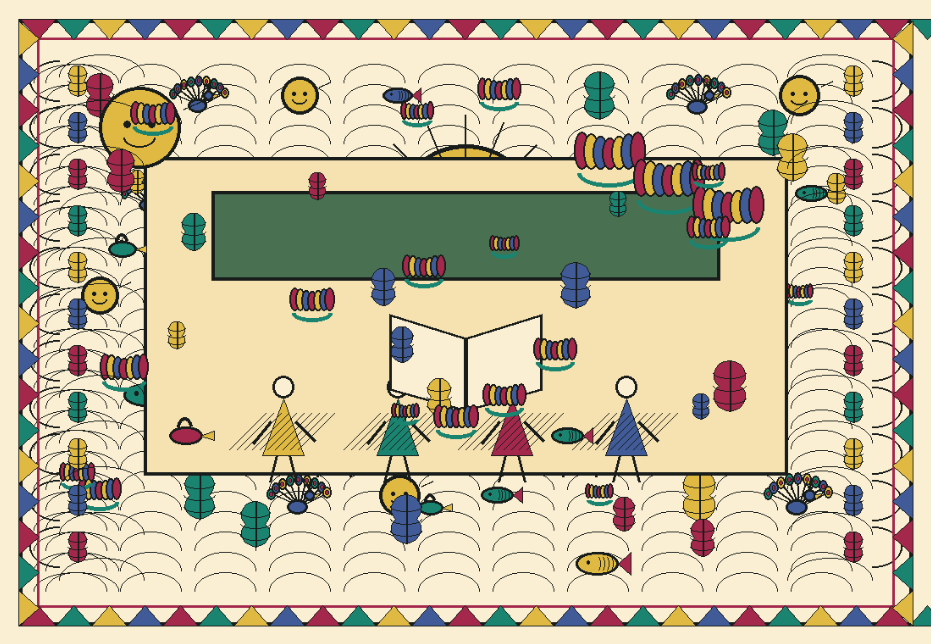

चित्र 15

राति गहीर भेल, अंकिता माएक कोरामे बैसि यात्राक खिस्सा सुनाबए लागलि —

'माए, रस्तामे यमुना सन चाकर एकटा धार भेटल!' (शब्द: यमुना)

'फेर रस्तामे रजनी उतरि आयल, आ हम सभ रस्ता रोकि कऽ थोड़ेक विश्राम कएलहुँ।' (शब्द: रजनी)

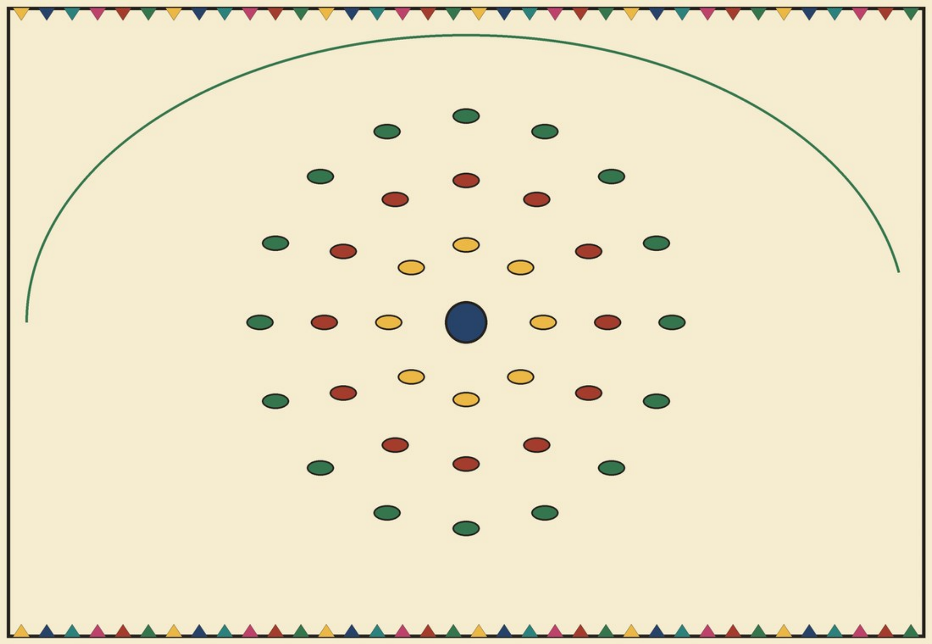

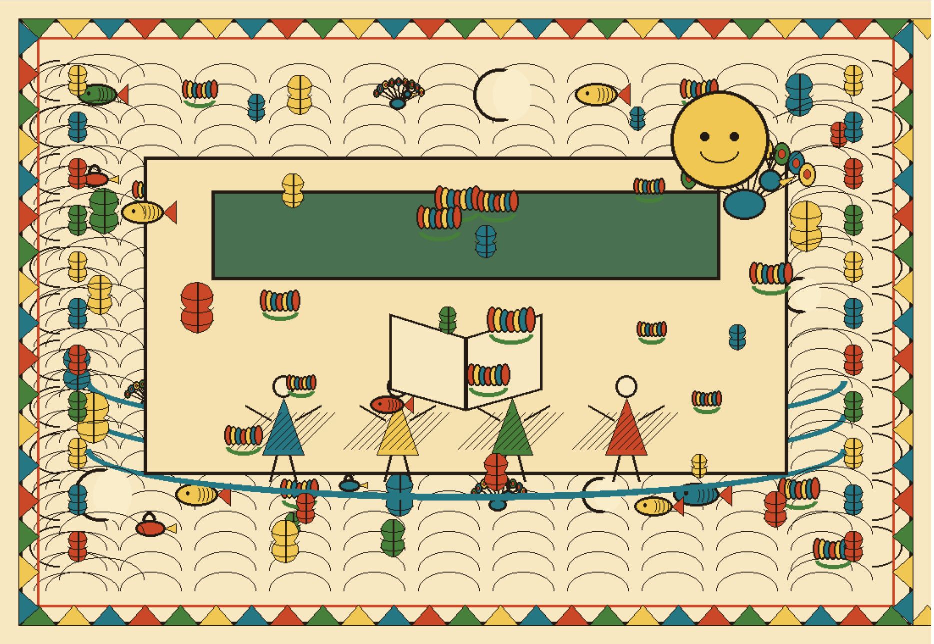

चित्र 16

'लस्सा-माटिमे पएर फँसि गेल रहए, मुदा पिताजी हमरा उठा लेलनि!' (शब्द: लस्सा)

'बोने-बोन घुमैत हम सभ अन्ततः घर पहुँचि गेलहुँ — हमरा हर्ष भऽ रहल अछि!' (शब्द: बोन, हर्ष) — अंकिताक आँखि नीन्दसँ बन्द होमए लगलैक, आ ओ माएक कोरामे सुति गेलि।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: रस्तामे कोन चकरगर धार भेटल छल?

उत्तर: यमुना

प्रश्न: टहाटही लेल कोन शब्द प्रयुक्त भेल?

उत्तर: रजनी

प्रश्न: अंकिताक पएर कोन माटिमे फँसल छल?

उत्तर: लस्सा

प्रश्न: अंकिताकेँ घर पहुँचि कोन भाव भेल?

उत्तर: हर्ष

अध्याय ९ : शिक्षकक टिप्पणी : आगाँक यात्रा

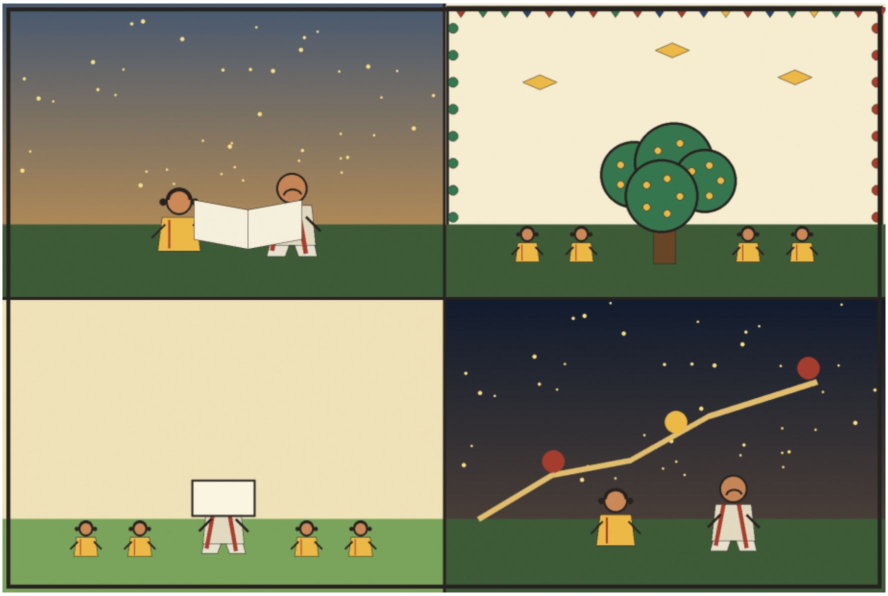

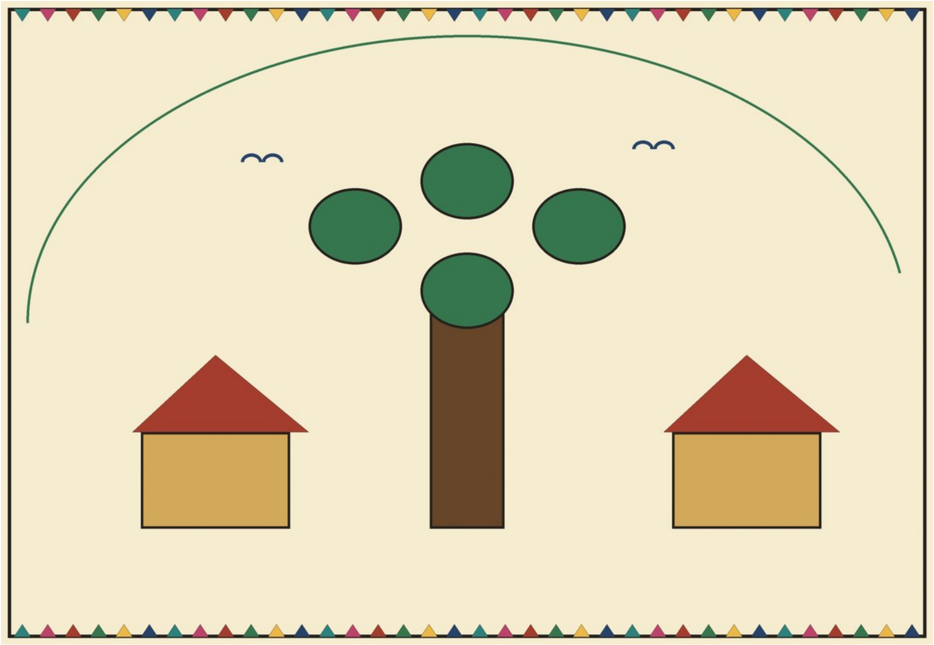

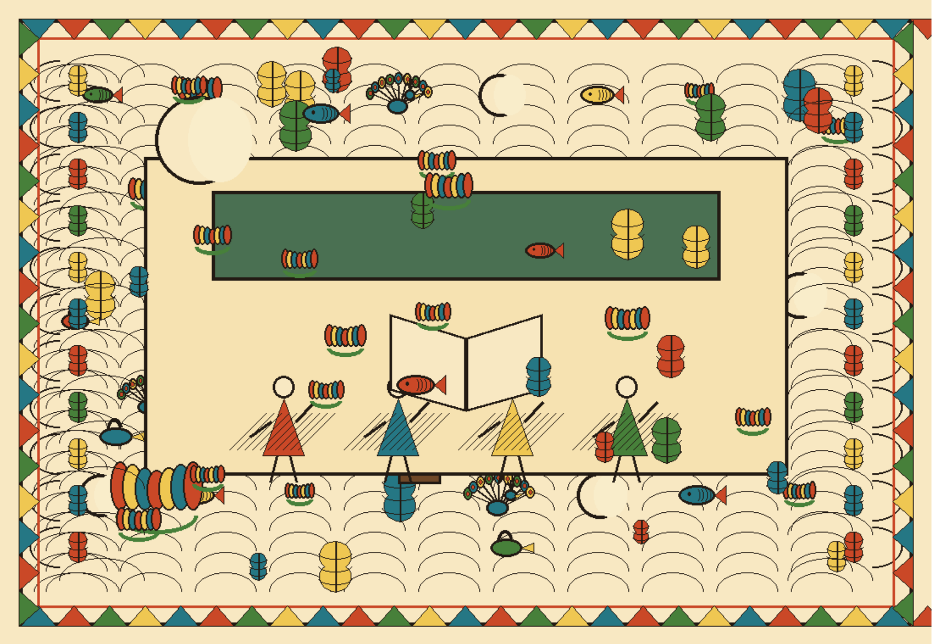

चित्र 17

अंकिताक ई साँझ-यात्रा एतय समाप्त होइत अछि, मुदा वर्णमाला-शिक्षाक यात्रा नहि समाप्त होइत अछि। एहि पोथीक मूल उद्देश्य थिक — बच्चाकेँ खिस्सा सुनबैत-सुनबैत मैथिली वर्णमालाक सभ अक्षरसँ परिचित कराएब।

जेना अंकिताक ई खिस्सा 'अ' सँ 'ह' धरिक वर्णक्रममे शब्द समेटने अछि, तहिना अभिभावक आ शिक्षक एहि पद्धतिकेँ आगाँ बढ़ा सकैत छथि — नव-नव खिस्सा बना कऽ, प्रत्येक वर्णसँ शुरू होमएबला शब्द भरि-भरि कऽ।

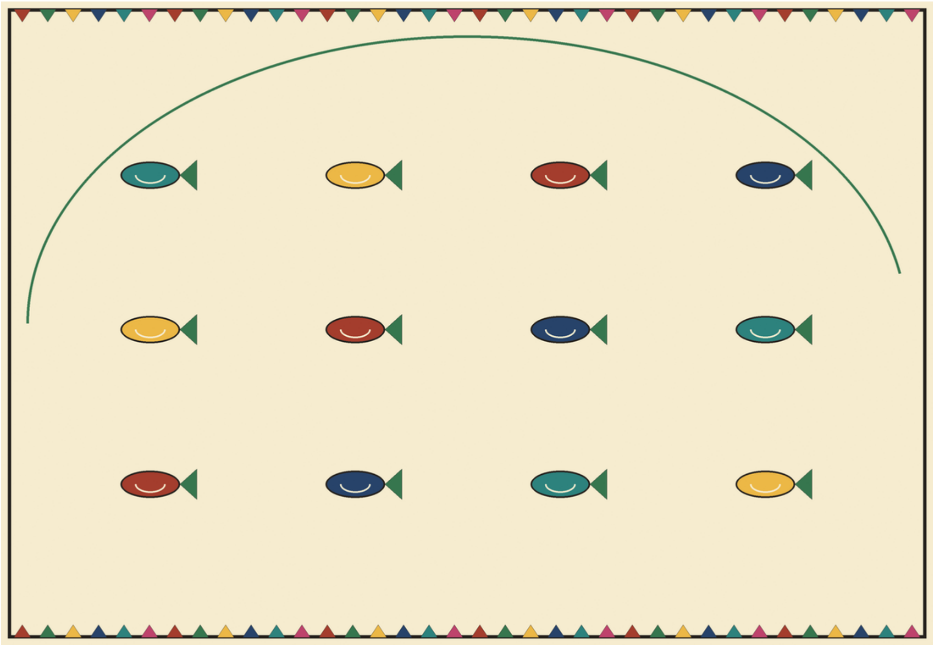

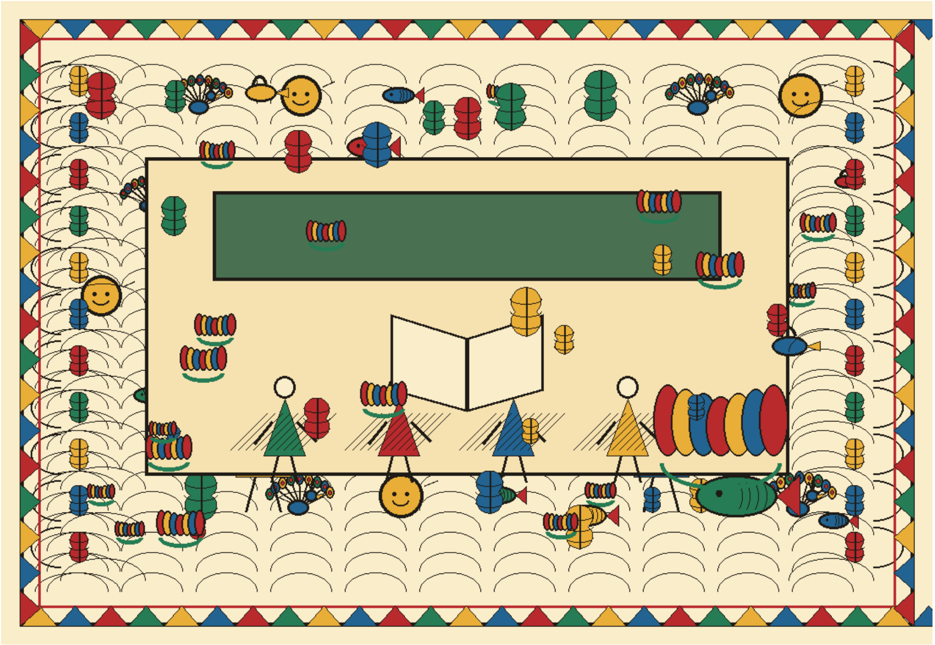

चित्र 18

खिस्सा कतेक बेर बच्चाकेँ सुनाओल जाए, से बच्चाक क्षमता आ कथामे प्रयुक्त शब्दावलीक संख्याक हिसाबसँ निर्धारित करब उचित अछि — प्रत्येक बच्चाक गति भिन्न होइत छैक, तेँ धैर्य आवश्यक अछि।

अंकिताक ई गाथा — एकटा साधारण साँझक यात्रा, जे वर्णमालाक पूर्ण यात्रा बनि गेल — मिथिलाक बाल-साहित्यमे एकटा अभिनव प्रयोग थिक। ई पोथी ने केवल मनोरंजन करैत अछि, अपितु शिक्षाक एकटा सहज, आनन्दमय माध्यम सेहो प्रस्तुत करैत अछि — जतय भाषा सिखब कोनो बोझ नहि, एकटा प्रेमपूर्ण यात्रा बनि जाइत अछि, जेना अंकिता अपन पिताक संग कएलक।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in